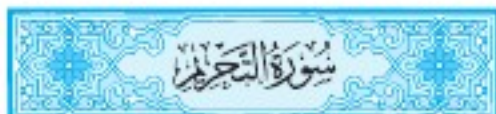


## सूरह तहरीम - 66



### सूरह तहरीम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 12 आयतें हैं।

- इस का नाम इस की प्रथम आयत से लिया गया है। जिस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की एक चूक पर सावधान किया गया है। जो आप से आप की अपनी पत्नियों से प्रेम के कारण हुई। और आप की पत्नियों की भी पकड़ की गई है। और उन्हें अपना सुधार करने की ओर ध्यान दिलाया गया है।
- इस की आयत 6 से 8 तक में ईमान वालों को अपनी पत्नियों का सुधार करने से निश्चिन्त न होने और अपना दायित्व निभाने का निर्देश दिया गया है कि उन्हें प्रलोक के दण्ड से बचाने के लिये भरपूर प्रयास करें।
- आयत 9 में काफिरों तथा मुनाफिकों से जिहाद करने का आदेश दिया गया है। जो सदा आप के तथा मुसलमान स्त्रियों के बारे में कोई न कोई उपद्रव मचाते थे।
- आयत 10 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की दो पत्नियों को चेतावनी दी गई है। और अन्त में दो सदाचारी स्त्रियों का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त  
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे नबी! क्यों हराम (अवैध) करते हैं उसे जो हलाल (वैध) किया है अल्लाह ने आप के लिये? आप अपनी पत्नियों की प्रसन्नता<sup>[1]</sup> चाहते हैं? तथा अल्लाह

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكَ تَبْتَغِي مَرْضَاتِ أَزْوَاجِكَ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ

- 1 हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अस्त्र की नमाज़ के पश्चात् अपनी सब पत्नियों के यहाँ कुछ देर के लिये जाया करते थे। एक बार कई दिन अपनी पत्नी जैनब (रज़ियल्लाहु अन्हा) के यहाँ अधिक देर तक रह गये। कारण यह था कि वह आप को मधु पिलाती थी। आप की पत्नी आईशा तथा

अति क्षमी दयावान् है।

2. नियम बना दिया है अल्लाह ने तुम्हारे लिये तुम्हारी शपथों से निकलने<sup>[1]</sup> का। तथा अल्लाह संरक्षक है तुम्हारा, और वही सर्व ज्ञानी गुणी है।
3. और जब नबी ने अपनी कुछ पत्नियों से एक<sup>[2]</sup> बात कही, तो उस ने उसे बता दिया, और अल्लाह ने उसे खोल दिया नबी पर, तो नबी ने कुछ से सूचित किया और कुछ को छोड़ दिया। फिर जब सूचित किया आप ने पत्नी को उस से तो उस ने कहा: किस ने सूचित किया आप को इस बात से? आप ने कहा: मुझे सूचित किया है सब जानने और सब से सूचित रहने वाले ने।
4. यदि तुम<sup>[3]</sup> दोनों (हे नबी की पत्नियो!) क्षमा माँग लो अल्लाह से (तो तुम्हारे लिये उत्तम है), क्योंकि तुम दोनों के दिल कुछ झुक गये हैं। और यदि तुम दोनों एक-दूसरे की

قَدْ فَرَضَ اللَّهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ أَيْمَانِكُمْ وَاللَّهُ مَوْلَاكُمْ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝

وَإِذْ أَسْرَ النَّبِيُّ إِلَىٰ بَعْضِ أَزْوَاجِهِ حَدِيثًا فَلَمَّا بَيَّنَّاتُ بِهِ وَأَظْهَرَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ عَرَفَ بَعْضُهُ وَأَعْرَضَ عَنْ بَعْضٍ فَلَمَّا بَيَّنَّاهُ لَهُ قَالَتْ مَنْ أَبْأَلَكَ هَذَا قَالَ بَيَّنَّاتُ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝

إِنْ تَتُوبَا إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا وَإِنْ تَظَاهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَاهُ وَجِبْرُتٌ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمَلَائِكَةُ بَعْدَ ذَلِكَ ظَهِيرٌ ۝

हफ़सा (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने योजना बनाई कि जब आप आयें तो जिस के पास जायें वह यह कहे कि आप के मुँह से मगाफ़ीर (एक दुर्गाधित फूल) की गन्ध आ रही है। और उन्होंने यही किया। जिस पर आप ने शपथ ले ली कि अब मधु नहीं पीऊँगा। उसी पर यह आयत उतरी। (बुखारी: 4912) इस में यह संकेत भी है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को भी किसी हलाल को हARAM करने अथवा हARAM को हलाल करने का कोई अधिकार नहीं था।

- 1 अर्थात् प्रयाश्चित दे कर उस को करने का जिस के न करने की शपथ ली हो। शपथ के प्रयाश्चित (कफ़ारा) के लिये देखिये: माइदा, आयत: 81।
- 2 अर्थात् मधु न पीने की बात।
- 3 दोनों से अभिप्राय: आदरणीय आईशा तथा आदरणीय हफ़सा हैं।



सहायता करोगी आप के विरुद्ध तो निःसंदेह अल्लाह आप का सहायक है तथा जिब्रिल और सदाचारी ईमान वाले और फरिश्ते (भी) इन के अतिरिक्त सहायक हैं।

5. कुछ दूर नहीं कि आप का पालनहार यदि आप तलाक़ दे दें तुम सभी को तो बदले में दे आप को पत्नियाँ तुम से उत्तम, इस्लाम वालियाँ, इबादत करने वालियाँ, आज्ञा पालन करने वालियाँ, क्षमा माँगने वालियाँ, व्रत रखने वालियाँ, विधवायें तथा कुमारियाँ।
6. हे लोगो जो ईमान लाये हो! बचाओ<sup>[1]</sup> अपने आप को तथा अपने परिजनों को उस अग्नि से जिस का ईंधन मनुष्य तथा पत्थर होंगे। जिस पर फरिश्ते नियुक्त हैं कड़े दिल, कड़े स्वभाव वाले। वह अवैज्ञा नहीं करते अल्लाह के आदेश की तथा वही करते हैं जिस का आदेश उन्हें दिया जाये।
7. हे काफ़िरो! बहाना न बनाओ आज, तुम्हें उसी का बदला दिया जा रहा है जो तुम करते रहे।
8. हे ईमान वालो! अल्लाह के आगे

عَلَى رَبِّهِ إِنْ طَلَغْتُمْ أَنْ يُبْدِلَهُ أَزْوَاجًا خَيْرًا مِمَّنْ لَمْ تُسَلِّمُوا مِنْهُ قَدْ تَبَيَّنَ عِيْدُهُمْ سَبِيحَتِ تَبَيَّنَ وَأَبْكَارًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا وَفُودُهَا النَّاسُ وَالْجِبَارَةُ عَلَيْهَا مَلَائِكَةٌ غِلَظٌ شِدَادٌ لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ إِنَّمَا تُجْرُونَ مَا لَكُم مَّا تَعْمَلُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَّصُوحًا ۝

- 1 अर्थात् तुम्हारा कर्तव्य है कि अपने परिजनों को इस्लाम की शिक्षा दो ताकि वह इस्लामी जीवन व्यतीत करें। और नरक का ईंधन बनने से बच जायें। हदीस में है कि जब बच्चा सात वर्ष का हो जाये तो उसे नमाज़ पढ़ने का आदेश दो। और जब दस वर्ष का हो जाये तो उसे नमाज़ के लिये (यदि ज़रूरत पड़े तो) मारो। (तिर्मिज़ी- 407)

पत्थर से अभिप्राय वह मूर्तियाँ हैं जिन्हें देवता और पूज्य बनाया गया था।

सच्ची<sup>[1]</sup> तौबा करो। संभव है कि तुम्हारा पालनहार दूर कर दे तुम्हारी बुराईयाँ तुम से, तथा प्रवेश करा दे तुम्हें ऐसे स्वर्गों में बहती हैं जिन में नहरों। जिस दिन वह अपमानित नहीं करेगा नबी को और न उन को जो ईमान लाये हैं उन के साथ। उन का प्रकाश<sup>[2]</sup> दौड़ रहा होगा उन के आगे तथा उन के दायें, वह प्रार्थना कर रहे होंगे: हे हमारे पालनहार! पूर्ण कर दे हमारे लिये हमारे प्रकाश को, तथा क्षमा कर दे हम को। वास्तव में तू जो चाहे कर सकता है।

9. हे नबी! आप जिहाद करें काफ़िरो और मुनाफ़िकों से और उन पर कड़ाई करें।<sup>[3]</sup> उन का स्थान नरक है और वह बुरा स्थान है।

10. अल्लाह ने उदाहरण दिया है उन के लिये जो काफ़िर हो गये नूह की पत्नी तथा लूत की पत्नी का। जो दोनों विवाह में थीं दो भक्तों के हमारे सदाचारी भक्तों में से। फिर दोनों ने विश्वासघात<sup>[4]</sup> किया उन से।

عَنِ رَبِّكَ أَنْ يَكْفِرَ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللَّهُ النَّبِيَّ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ نُورُهُمْ يَسْعَى بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَتْمِمْ لَنَا نُورَنَا وَاغْفِرْ لَنَا إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ وَمَا لَهُمْ جَهَنَّمَ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ

ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ كَفَرُوا امْرَأَتِ نُوحٍ وَامْرَأَتِ لُوطٍ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتَاهُمَا فَلَمْ يُغْنِيا عَنْهُمَا مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَقِيلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدَّاسِخِينَ

1 सच्ची तौबा का अर्थ यह है कि पाप को त्याग दे। और उस पर लज्जित हो तथा भविष्य में पाप न करने का संकल्प ले। और यदि किसी का कुछ लिया है तो उसे भरे और अत्याचार किया है तो क्षमा माँग ले।

2 देखिये: सूरह हदीद, आयत: 12)।

3 अर्थात् जो काफ़िर इस्लाम के प्रचार से रोकते हैं, और जो मुनाफ़िक उपद्रव फैलाते हैं उन से कड़ा संघर्ष करें।

4 विश्वासघात का अर्थ यह है कि आदरणीय नूह (अलैहिस्सलाम) की पत्नी ने ईमान तथा धर्म में उन का साथ नहीं दिया। आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह के यहाँ कर्म काम आयेगा। सम्बंध नहीं काम नहीं आयेंगे।

तो दोनों उन के, अल्लाह के यहाँ कुछ काम नहीं आये। तथा (दोनों स्त्रियों से) कहा गया कि प्रवेश कर जाओ नरक में प्रवेश करने वालों के साथ।

11. तथा उदाहरण<sup>[1]</sup> दिया है अल्लाह ने उन के लिये जो ईमान लाये फिरऔन की पत्नी का। जब उस ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! बना दे मेरे लिये अपने पास एक घर स्वर्ग में, तथा मुझे मुक्त कर दे फिरऔन तथा उस के कर्म से, और मुझे मुक्त कर दे अत्याचारी जाति से।

12. तथा मर्यम, इम्रान की पुत्री का, जिस ने रक्षा की अपने सतीत्व की, तो फूँक दी हम ने उस में अपनी ओर से रूह (आत्मा)। तथा उस (मर्यम) ने सच्च माना अपने पालनहार की बातों और उस की पुस्तकों को। और वह इबादत करने वालों में से थी।

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِّلَّذِينَ آمَنُوا امْرَأَاتِ فِرْعَوْنَ  
إِذْ قَالَتِ رَبِّ ابْنِ لِي عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِي مِّنْ  
فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهِ وَنَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ٥

وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرَانَ الَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا  
فَنَفَخْنَا فِيهِ مِن رُّوحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمَاتِ رَبِّهَا  
وَكُتِبَ لَهَا فَكَانَتْ مِنَ الْغَائِبِينَ ٦

1 हदीस में है कि पुरुषों में से बहुत पूर्ण हुये। पर स्त्रियों में इमरान की पुत्री मर्यम और फिरऔन की पत्नी आसिया ही पूर्ण हुई। और आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की प्रधानता नारियों पर वही है जो सरीद (एक प्रकार का खाना) की सब खानों पर है। (सहीह बुखारी: 3411, सहीह मुस्लिम: 2431)